International Journal of Information Movement *Vol. 8 Issue VIII* *(December, 2023)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages** **30-37**

कॉलिंग ग्रामीण: पंजाब एवं हरियाणा के संदर्भ में महिलाओं और पुरुषों पर मोबाइल फोन के सामाजिक व मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन

डॉ. रीना रानी
Email-Id :reenamalik7002@gmail.com

सारांश
एक ग्रामीण भारत जहां 69 प्रतिशत भारतीय परिवार निवास करते हैं अब सुविधाओं से भरपुर है। सूचना व संचार जो एक सामाजिक प्राणी के लिए अति आवश्यक है का आदान-प्रदान अब मोबाइल फोन से होने लगा है जबकि पहले लोग सूचना प्राप्ति के लिए अपने पड़ोसी पर और वे पड़ोसी अपने पड़ोसियों पर निर्भर रहते थे। ग्रामीण भारत में मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं में प्रतिवर्ष वृद्धि देखने को मिलती है। भारतीय समाज के पुरुष प्रधान होने के कारण मोबाइल फोन पर पहला हक पुरुष को ही मिला जब ग्रामीण क्षेत्र में कुछेक महिलाओं द्वारा मोबाइल फोन उपयोग में लाया जाने लगा तब ग्रामीण पंचायतों ने इस पर आपत्ति जताते हुए अपने बेतुके फरमान जारी किये व गांव में लड़कियों के मोबाइल फोन के उपयोग पर पाबंदी लगाई गई जैसी अनेकों चुनौतियों कम साक्षरता, उच्च गरीबी व बिजली समस्या इत्यादि को पार करते हुए मोबाइल फोन आम-जन तक पहुंच गया। कम लागत व अत्यधिक पहुंच के कारण मोबाइल फोन ने लोगों को अपना आदी बना लिया जिसका लोगों पर कई तरह का प्रभाव पड़ रहा है। इस संदर्भ में यह शोध पत्र पंजाब व हरियाणा के ग्रामीण परिवारों में महिलाओं एवं पुरुषों दोनों पर मोबाइल फोन के सामाजिक व मनोवैज्ञानिक प्रभाव की जांच करता है। प्रस्तुत अध्ययन में पंजाब एवं हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र से 80 परिवारों के कुल 230 लोगों पर सर्वेक्षण किया और पाया कि ग्रामीण भारतीयों की पारिवारिक गतिशीलता को मोबाइल फोन प्रभावित कर रहा है। मोबाइल फोन ग्रामीण भारत को सामाजिक व मनोवैज्ञानिक रुप से सशक्त के साथ-साथ कमजोर कर रहा है। मोबाइल फोन के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक किसी भी प्रभाव में लैंगिक विभिन्नता नहीं पाई गई है। मोबाइल फोन का प्रभाव महिलाओं और पुरुषों पर समान रुप से पड़ रहा है। मोबाइल फोन से लैंगिक असमानताओं को दूर करने की संभावना है। अब गांव में लोग मोबाइल फोन के आदी होते हुए बिना काम के व्यस्त हो रहे हैं और कई मनोवैज्ञानिक बीमारियां और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

संकेत शब्द- मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ग्रामीण परिवार, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव

1.0 भूमिका
भारत में मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 120 करोड़ है जो चीन के बाद विश्व में दुसरे स्थान पर है(ट्राई 2023) ।हरियाणा और पंजाब में मोबाइल नेटवर्क के विस्तार और प्रसार के साथ स्मार्टफोन और इंटरनेट का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। भारत में पहली गैर व्यवसायिक रुप से मोबाइल फोन सेवा 48 वें स्वतंत्रता दिवस पर 15 अगस्त 1995 को देश की राजधानी दिल्ली में शुरू की गई थी। 1995 में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ज्योती बसु ने तत्कालीन केंद्रीय संचार मंत्री सुख राम को पहला मोबाइल कॉल किया था(राबिन जेफरी एवं अन्य 2013)। 1995 में ही तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सरकार ने संचार विभाग और पोस्ट ऑफिस को अलग करके दूरसंचार विभाग की स्थापना की। इसी साल बड़े शहरों के अंदर मोबाइल टेलीफोन सेवा शुरू हो गई थी। 1986 में विदेश संचार निगम (वीएसएनएल) और महानगर टेलीकोम निगम (एमटीएनएल) दोनों संगठनो की स्थापना की गई थी। नई दूरसंचार नीति 1999 के कारण फोन की कीमत और कॉल दर में कमी की गई (वनीता कोहली खांडेकर, 2017) । 2000 में भारत संचार निगम की स्थापना की गई। 2002 तक मोबाइल फोन पर लगने वाले करों को 72.5 प्रतिशत से घटाकर 14 प्रतिशत कर दिया गया (राबिन जेफरी एवं अन्य 2013)। 2002 में रिलायंस इंफोकॉम ने लोगों को बेहद सस्ती दरों पर मोबाइल सेवा प्रदान की। 2016 में उद्योगपति मुकेश अंबानी ने इसका नाम बदलकर रिलायंस जियो कर दिया। इन्होने पहले मुफ्त में और बाद में बेहद कम दर पर डेटा और मुफ्त वायॅस कॉल की सुविधा दी। इससे उपभोक्ताओं की संख्या में बढ़ौतरी होती गई(वनीता कोहली खांडेकर, 2017)। आजादी के समय भारत में 34 करोड़ की जनसंख्या के पास कुल 100,000 टेलीफोन थे। 1980 में पूरे भारत में केवल 12,000 सार्वजनिक फोन बूथ थे। 1991 तक 1124 शहरों, कस्बों तथा 212 देशों से सीधे डायल घुमाकर बातचीत करने की सुविधा उपलब्ध हो चुकी थी। राजीव गांधी की मृत्यु के समय 1,000 लोगों की संख्या पर सिर्फ 6 मोबाइल फोन थे (रोबिन जेफरी व अन्य,2013)। 2012 में भारत में दो ग्रामीण परिवारों में से एक के पास और 2018 में 36 प्रतिशत घरों में मोबाइल फोन की सुविधा थी। कोरोना महामारी में लॉकडाउन के समय ग्रामीण भारत में स्मार्टफोन की संख्या दोगुनी से भी अधिक बढ़ गई । 2022 में 74.8 प्रतिशत घर मोबाइल फोन का उपयोग कर रहे हैं। 88 प्रतिशत परिवार मोबाइल फोन से इंटरनेट का लाभ उठा रहे हैं यहां तक कि

हरियाणा में 86 और पंजाब में 90 प्रतिशत बच्चों की भी घर में मोबाइल फोन तक पहुंच है (एएसईआर 2022) । संयुक्त राज्य अमेरिका और आस्ट्रेलिया में पुरुष और महिलाएं लगभग बराबर मात्रा में इंटरनेट का उपयोग करते हैं जबकि भारत, जापान और चीन में इंटरनेट के उपयोग पर पुरुष का प्रभुत्व बना हुआ है (ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2021)। पुरुषों की तुलना में भारतीय महिलाओं के पास मोबाइल फोन रखने की संभावना 15 प्रतिशत और इंटरनेट उपयोग करने की संभावना 33 प्रतिशत कम है(ऑक्सफैम रिपोर्ट 2022)। फिर भी भारत में दुनिया की चीन के बाद दूसरी सबसे अधिक इंटरनेट एवं मोबाइल फोन प्रयोग करने वाली आबादी है। वर्तमान में भारत में 74.4 करोड़ लोग मोबाइल के जरिए इंटरनेट का प्रयोग कर रहे हैं। 2040 तक लगभग 150 करोड़ लोग भारत में मोबाइल के जरिए इंटरनेट का प्रयोग कर रहे होंगे (स्टेटिस्टा डॉट कॉम 2021)। भारत में जिस तरह से मोबाइल फोन का उपयोग बढ़ रहा है ऐसे में भारतीय गांव में मोबाइल फोन के कारण लोगों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने व समझने के लिए यह अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

2.0 साहित्य समीक्षा

(अनुज कुमार 2010) ने ग्रामीण परिवारों के प्रतिभागी अवलोकन में पाया अब ग्रामीण का मतलब गरीब नहीं है। लोग बिजली गुल होने पर जनरेटर से मोबाइल फोन चार्ज करते हैं। **(बलवंत सिंह मेहता 2016)** के अध्ययन के अनुसार गावं में लोग मोबाइल फोन का उपयोग कृषि, गैर कृषि कार्यों, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य व व्यवसाय के बारे में जानकारी प्राप्त करने, पैसे का लेन-देन करने के साथ-साथ परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ संपर्क में रहने के लिए कर रहे हैं। मोबाइल फोन एक शक्तिशाली उपकरण है जो भौगोलिक रूप से बिखरे हुए परिवार को जोड़ने का काम कर रहा है **(रिच लिंग एवं अन्य,2005 और अहिल्या तिवारी, 2014)** । ग्रामीण क्षेत्र, में मोबाइल फोन का उपयोग विशेषकर सामाजिक नेटवर्क को बढ़ाने लिए किया जाता है खासकर वहां जहां पारिवारिक सदस्य एक दूसरे से दूर रहते हैं। लेकिन यह हमारे संबंधो की प्रकृति को प्रभावित कर रहा है **(शिल्पा शर्मा 2009)** । आपातकालीन स्थिति में भी मोबाइल फोन का उपयोग किया जाता है। महिलाएं सार्वजनिक स्थानों पर मोबाइल फोन को अंगरक्षक के रूप में मानती हैं **(केट फॉक्स 2001)** ।**(सुप्रिया सिंह 2001)** महिलाएं मोबाइल फोन को एक तकनीक की बजाय रोजाना की गतिविधियों को पुरा करने के एक उपकरण के रूप में देखती है।**(आचल तायवाड़े व अन्य 2019)** जहां महिलाएं अपने मोबाइल फोन से संचार व सामाजिक नेटवर्किंग साईटस का उपयोग करना पसंद करती हैं वहीं पुरुष गेम खेलना, संगीत सुनना व वीडियो देखना पसंद करते हैं। **(मुहम्मद नदीम डोगर व अन्य 2022),** अधिकतर लोग खाली समय में मोबाइल फोन का उपयोग संवाद करने के लिए कर रहे हैं जिससे सामाजिकरण में वृद्धि हो रही है। युवा वर्ग मोबाइल फोन के माध्यम से लोगों से संचार करते हैं जिससे उनका समाज के अधिक लोगों से संबंध बनता है। मोबाइल गपशप व्यक्ति के लिए अच्छी हैं। गपशप केवल समय व्यतीत करना ही नहीं हैं बल्कि यह मनुष्य के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक तंदरुस्ती के लिए भी जरुरी है। पुरुष भी स्त्रियों की तरह गपशप करते हैं। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक रिश्तों के लिए आवश्यक है **(केट फॉक्स 2001)**। **(सिरपा तेनहुनेन 2018)** के अध्ययन के अनुसार ग्रामीण भारत में महिलाएं रिश्तेदारों में पुरुष प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए, नए रिश्तों को बनाने और पुराने रिश्तों को कायम रखने के लिए मोबाइल फोन का उपयोग कर रही है। युवा विवाहित महिलाएं मोबाइल फोन का धन्यवाद इसलिए करती है मोबाइल फोन से वो लगातर अपने मायके वालों के साथ संपर्क में रहती है। वे मोबाइल फोन पर सबसे अधिक बातचीत अपनी मां से करती है। लड़के और लड़कियां दोनों ही मोबाइल फोन का सबसे अधिक उपयोग गेम खेलने और संगीत सुनने के लिए करते हैं। **(अनुज कुमार 2010)** ने ग्रामीण परिवारों के अवलोकन में पाया कि परिवार में एक सांझा मोबाइल फोन होने के कारण लड़के उस पर अपना एकाधिकार बनाते हैं वे अपनी बहनों को ज्यादा देर मोबाइल फोन प्रयोग नहीं करने देते ताकि खुद प्रयोग कर सकें। जिससे उनका झगड़ा होता है घर के काम में व्यस्तता के समय लड़कियां रसोई की अलमारी में मोबाइल फोन छिपा देती है ताकि बाद में मोबाइल फोन पर गेम खेल सके।**(सिरपा तेनहुनेन 2019)** गांव में लोग अपने बच्चों को नियमित रूप से फोन कॉल करने की अनुमति नहीं देते हैं।**(कोस्टाडिन कुशलेव एवं अन्य, 2019)** मोबाइल फोन किस तरह से बच्चों एवं माता- पिता के बीच बढ़ती दूरी का कारण बन रहा है को जानने के लिए 200 माता-पिता का सर्वेक्षण किया । माता- पिता ने कहा कि उन्हें स्मार्टफोन की वजह से अपने बच्चों से दूर होने का एहसास हुआ है। वे सामाजिक मेलजोल के दौरान भी अपने स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं। स्मार्टफोन हमें दूसरों से जोड़ने के लिए डिजाइन किए गऐ हैं लेकिन वर्तमान परिवेश में यह हमें लोगों से अलग कर रहा है। **(मधुलिका श्रीवास्तव व अन्य 2021)** मोबाइल फोन का अत्याधिक उपयोग संबंधों को जोड़ने की बजाए तोड़ने का काम कर रहा है । **(सेहर शौकत, 2019)** जो लोग स्मार्टफोन के आदी होते हैं उन्हें मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं चिंता, घबराहट, तनाव, नींद में कमी, अवसाद जैसी समस्या घेर लेती हैं। चिंता और भय जैसे भाव भी मोबाइल फोन से जुड़े हुए हैं। मोबाइल फोन के कारण आभासी समुदायों का निर्माण हो रहा है। 143 विवाहित महिलाओं पर किए गए अध्ययन में सामने आया है कि आभासी संबंधों का हमारे वर्तमान

रिश्तों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।**(कोरी ए किल्डेर व अन्य 2017)** मोबाइल फोन का पारिवारिक संघर्षों में योगदान बढ़ रहा हैं। बढ़ी हुई मोबाइल कनेक्टिविटी माता-पिता को बच्चों के साथ बातचीत करने से विचलित व बाधित कर रही हैं। विचलित माता-पिता अपने बच्चों के प्रति कम संवेदनशील हो रहे हैं। नई मीडिया प्रौद्योगिकियां घर के अंदर व्यक्तियों के बीच सामाजिक संपर्क पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। यह घर में निजीकरण को बढावा दे रही है जिससे सामाजिक अलगाव बढ़ रहा हैं। तकनीकी क्रांति ने विभिन्न तरीकों से घरों में दैनिक जीवन को प्रभावित किया है**(सियोभान मैकग्रथ, 2012)** ।मोबाइल फोन के नकारात्मक प्रभावों को देखते हुए अब परिवार अपने घर के अंदर मोबाइल फोन के इस्तेमाल के लिए नियम बना रहे हैं जैसे कि रात्रि के भोजन के समय का इस्तेमाल नहीं करना **(हैदर केनेडी ईडन,2014)** ।

3.0 शोध कार्यप्रणाली

3.1 उददेश्य :

1. ग्रामीण महिलाओं पर मोबाइल फोन के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को जानना।
2. ग्रामीण पुरुषों पर मोबाइल फोन के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को जानना।
3. ग्रामीण महिलाओं और पुरुषों पर मोबाइल फोन के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों संबंधी विभिन्नता को जानना।

3.2 परिकल्पनाएं:

1 लैंगिक आधार पर मोबाइल फोन के सामाजिक प्रभावों में विभिन्नता है।
2 लैंगिक आधार पर मोबाइल फोन के मनोवैज्ञानिक प्रभावों में विभिन्नता है।

4.0 सैम्पल का चयन

अध्ययन के लिए पंजाब और हरियाणा की पुलिस रेंज से रेंडम सैम्पल की लॉटरी विधि का प्रयोग करते हुए पंजाब की पटियाला पुलिस रेंज से जिला पटियाला और हरियाणा की अंबाला पुलिस रेंज से जिला कुरुक्षेत्र के जनसंख्या के हिसाब से सबसे बड़े गांव शुतराना और गूमथला गढु का चयन किया गया । इन गांवो में साधारण रेंडम सैम्पल तकनीक से 40-40 परिवारों का चयन किया गया। अध्ययन में संयुक्त एवं एकल दोनों तरह के परिवारों को शामिल करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक परिवार के 12 साल से ऊपर के सभी पारिवारिक सदस्यों से प्रश्नावली के माध्यम आंकड़े एकत्रित किए गए। दोनो गांव से 80 परिवारों के लगभग 280 लोगों को प्रश्नावली दी गई जिनमें से 230 लोगों ने प्रश्नवाली के जवाब दिए जिन्हें इस अध्ययन में शामिल किया गया है।

5.0 **परिणामः–** भारतीय ग्रामीण परिवारों के सर्वेक्षण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए हैं

तालिका–1 जेंडर व मोबाइल फोन के सकारात्मक सामाजिक प्रभाव

		पूर्णत असहमत	असहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णत सहमत	कुल	x^2	Asymp. Sig. (2-sided)
पुरूष	आवृति	3	10	25	49	49	136	2.862	.581
	%	2.2%	7.4%	18.4 %	36.0%	36.0 %	100.0 %		
महिला	आवृति	2	3	23	35	31	94		
	%	2.1%	3.2%	24.5 %	37.2%	33.0 %	100.0 %		
कुल	आवृति	5	13	48	84	80	230		
	%	2.2%	5.7%	20.9 %	36.5%	34.8 %	100.0 %		

एसपीएसएस सॉफटवेयर में काई वर्ग परीक्षण के माध्यम से आंकडों का विश्लेषण करने पर प्राप्त तालिका–1 में $x^2 = 2.862$, पियर्सन का मान 0.581 है, जो 0.05 के विश्वास स्तर के मान से ज्यादा है। जो दर्शाता है कि जेंडर व मोबाइल फोन के सकारात्मक सामाजिक प्रभावों के बीच कोई संबंध नही है। महिलाओं और पुरुषों दोनों पर मोबाइल फोन समान सकारात्मक सामाजिक प्रभाव डाल रहा है।ग्रामीण मोबाइल फोन को परिवार के लिए बहुत उपयोगी उपकरण मानते हैं। वे समझते हैं कि मोबाइल फोन के उपयोग से परिवार दोस्त व रिश्तेदारों के साथ संबंध में सुधार होता है। मोबाइल फोन के आने से वे सामूहिक पारिवारिक कार्यक्रमों की फोटो व वीडियो एक दूसरे के साथ सांझा करते हैं जिससे परिवार एक दूसरे से जुड़ा हुआ महसूस करता है। उनका मानना है कि मोबाइल फोन ने सामाजिक संबंधो का बढ़ाया है। मोबाइल फोन ने पारिवारिक सदस्यों को पहले की तुलना में अधिक नजदीक ला दिया हैं जिससे पारिवारिक संचार व संबंधों की गुणवत्ता बढ़ी है। ग्रामीण मोबाइल फोन को पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों की मजबूती के लिए जरूरी मानते हैं। इसके साथ ही मोबाइल फोन ने व्यक्तिगत जीवन को आसान व आनन्दमयी बना दिया है। अनेक ऐसे कार्य जिनको करने में अधिक समय व धन खर्च होता है उनको मोबाइल फोन के माध्यम से बहुत कम समय व कम लागत से कर सकते हैं। ग्रामीण परिवार मानते हैं कि मोबाइल दैनिक गतिविधियों को पूरा करने में मदद करता है। ग्रामीण लोगों के अनुसार मोबाइल फोन ने पीढ़ियों के बीच की दूरी को खत्म कर दिया है। परिवार के अन्य लोगों को अब अपनी पढ़ाई व काम के संबंध में किसी बाहरी स्थान पर रहने पर अकेलापन का अनुभव नहीं होता।(अहिल्या तिवारी,2014 और रिच लिंग व अन्य,2012) मोबाइल फोन से सामाजिक संबंधो में वृद्धि हुई है।पंजाब एवं हरियाणा में भी ग्रामीण लोग मानते हैं कि मोबाइल से सामाजिक संबंध पहले से अधिक बेहतर व मजबूत हुए हैं। मोबाइल फोन ने पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता को बढ़ाया है(जैनी एस रैडस्की व अन्य, 2016)। मोबाइल फोन संचार की गुणवत्ता को बढ़ाने के साथ-साथ परिवार एवं उसके लोगों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तालिका–2 जेंडर व मोबाइल फोन के नकारात्मक सामाजिक प्रभाव

		पूर्णत असहमत	असहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णत सहमत	कुल	x^2	Asymp. Sig. (2-sided)
पुरूष	आवृति	2	6	21	76	31	136	**3.010**	**.699**
	%	1.5%	4.4%	15.4 %	55.9 %	22.8 %	100.0 %		
महिला	आवृति	2	2	15	47	28	94		
	%	2.1%	2.1%	16.0 %	50.0 %	29.8 %	100.0 %		
कुल	आवृति	4	8	36	122	59	230		
	%	1.7%	4.0%	15.6 %	53.0 %	25.7 %	100.0 %		

तालिका–2 में $x^2 = 3.010$, पियर्सन का मान 0.699 है, जो 0.05 के विश्वास स्तर के मान से ज्यादा है। जो दर्शाता है कि जेंडर व मोबाइल फोन के नकारात्मक सामाजिक प्रभावों के बीच कोई संबंध नही है। महिलाओं और पुरुषों दोनों पर मोबाइल फोन समान नकारात्मक सामाजिक प्रभाव डाल रहा है। अतः शोध की परिकल्पना संख्या–1 अस्वीकृत होती है। ग्रामीण परिवारों में मोबाइल फोन का सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी बढ़ रहा है। एक तरफ इसने संबंधो को नई शक्ति व दिशा दी है दूसरी और यह ग्रामीण परिवारों के बीच अंशाति व बैचेनी फैलाने वाली मशीन बनकर भी उभरा है। पारिवारिक सदस्य मोबाइल फोन के कारण एक दूसरे को पर्याप्त समय नहीं दे पा रहे है। माता-पिता बच्चों से बातचीत के समय में भी मोबाइल का प्रयोग कर रहे होते हैं। जिससे पारिवारिक समय की गुणवत्ता कम हो रही है। ग्रामीण पारिवारिक सदस्य मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग को लेकर एक दूसरे से शिकायत करते हैं। शहरों की तरह अब गांव में भी पारिवारिक सदस्य एक दूसरे से फेस टू फेस कम और मोबाइल फोन से अधिक बात करते हैं। जिसका आपसी रिश्तों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ग्रामीण लोगों के अनुसार मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग पारिवारिक संबंधों में गलतफेहमी पैदा कर रहा है जिससे पारिवारिक झगड़े बड़ रहे हैं। बच्चे अपने माता-पिता के साथ नए मोबाइल फोन को खरीदने को लेकर झगड़ा करते हैं। मोबाइल फोन से झूठ बोलने की प्रवृति भी परिवारों में बढ़ रही है। झूठ का ताना बाना शहर से होते

हुए भारतीय गांवो में भी पहुंच गया है। मोबाइल फोन एक सामाजिक समस्या हैं क्योंकि मोबाइल फोन ने उन्हें वास्तविक दुनिया से दूर एक आभासी दुनिया में लाकर छोड़ दिया हैं। मोबाइल फोन लोगों के जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है(हिलेरी ग्रोरके, 2014) ।मोबाइल फोन के आने के बाद से लोग एक दूसरे का हाल—चाल मोबाइल फोन से संपर्क करके जान लेते हैं (अहिल्या तिवारी, 2014) ।मोबाइल फोन का पारिवारिक रिश्तों पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताया है(वैलेंटीना रोटांडी व अन्य,2017 और होली सोफी व अन्य, 2018)। मोबाइल फोन ने लोगों को वास्तविक दुनिया से दूर किया है(डेविड सर्बरा,2019)। जबकि सोशल मीडिया के जरिए आभासी समुदायों में लोग एक दूसरे से ज्यादा जुड़ रहे हैं। सोशल मीडिया आभासी समुदायों के निर्माण का प्लेटफॉर्म है। पूर्व में हुए व वर्तमान अध्ययन यह साबित करता है कि ग्रामीण परिवारों के लिए मोबाइल एक बड़ी सामाजिक समस्या बन रहा है जिसके कारण जिन गांव व ग्रामीणों को रिश्तों में गर्माहट का स्थान कहा जाता था वहां भी मोबाइल के कारण पारिवारिक रिश्तों के खटास बढ़ रही है। लोग सीधे संवाद की बजाए मोबाइल जैसे माध्यम से अधिक संवाद कर रहे हैं जिसके कारण अधिक कनेक्टिविटी के बाद भी संवादहीनता की स्थितियां पैदा हो रही हैं जो परिवारों के बीच कई समस्याओं का कारण बन गया है।

तालिका–3 जेंडर व मोबाइल फोन के सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव

		पूर्णत असहमत	असहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णत सहमत	कुल	x^2	Asymp. Sig. (2-sided)
पुरूष	आवृति	8	15	27	49	37	136	4.307	.366
	%	5.9%	11.0%	19.9 %	36.0%	27.2 %	100.0 %		
महिला	आवृति	9	17	17	26	25	94		
	%	9.6%	18.1%	18.1 %	27.7%	26.6 %	100.0 %		
कुल	आवृति	17	32	44	75	62	230		
	%	7.4%	13.9%	19.1 %	32.6%	27.0 %	100.0 %		

एसपीएसएस सॉफटवेयर में काई वर्ग परीक्षण के माध्यम से आंकडों का विश्लेषण करने पर प्राप्त तालिका–3 में $x^2 = 4.307$, पियर्सन का मान 0.366 है, जो 0.05 के विश्वास स्तर के मान से ज्यादा है। जो दर्शाता है कि जेंडर व मोबाइल फोन के सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बीच महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। महिलाओं और पुरुषों दोनों पर मोबाइल फोन समान सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल रहा है। पंजाब एवं हरियाणा के अध्ययन में शामिल ग्रामीणों के अनुसार मोबाइल फोन ने उनके मनोविज्ञान को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया हैं। वे कहीं भी हों मोबाइल फोन उन्हे हमेशा घर से जुड़ा महसूस कराता हैं।आवश्यकता पड़ने पर तुरंत घर पर सम्पर्क किया जा सकता है। ग्रामीण लोगों को मोबाइल फोन का इस्तेमाल करना अच्छा लगता है। ये लोग कॉल व मैसेज आने पर उत्साहित हो जाते हैं। वे तुरंत अपने मोबाइल फोन पर मैसेज व कॉल का जवाब देते हैं। अधिकतर ग्रामीण लोग मोबाइल फोन का उपयोग तनाव को कम करने के लिए करते हैं। घर में लड़ाई झगड़ा होने पर खुद को शांत करने के लिए मोबाइल फोन में मनपसंद सामग्री देखते हैं। ग्रामीण लोग मोबाइल फोन को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बेहद उपयोगी मानते हैं। वे मानते हैं कि उनके कॅरियर को आगे बढ़ाने में मोबाइल उनकी मदद कर रहा है। पढ़ाई व व्यवसाय से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल फोन पर उपलब्ध हो जाती है। आधे से ज्यादा लोगों के अनुसार मोबाइल फोन उन्हें अधिक सक्षम बनाता हैं।मोबाइल फोन उनके कौशल को बढ़ाने में मदद करता है और उसके आने व होने से वे अधिक सशक्त हुए हैं। मोबाइल फोन ने गांव व शहर के बीच डिजिटल डिवाइड को खत्म कर दिया है। मोबाइल फोन उनके व्यक्तित्व को दर्शाता हैं। ग्रामीणों का कहना है कि गांव में लोग अब सार्वजनिक स्थान के साथ-साथ घर पर भी अपने मोबाइल फोन में व्यस्त दिखाई देते हैं। (जेनी रैडस्की एवं , 2018) लोग मोबाइल फोन का उपयोग तनाव से राहत पाने के लिए भी करते हैं। इससे पूर्व में हुए अध्ययन भी बताते हैं कि मोबाइल के होने से व्यक्ति को सशक्त एवं सक्षम होने का आभास रहता है।

तालिका–4 जेंडर व मोबाइल फोन के नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव

		पूर्णत असहमत	टसहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णत सहमत	कुल	x^2	Asymp. Sig. (2-sided)
पुरूष	आवृति	15	24	24	46	27	136	7.946	.159
	%	11.0 %	17.6 %	17.6 %	33.9 %	19.9 %	100.0 %		
महिला	आवृति	15	26	12	22	19	94		
	%	16.0 %	27.7 %	12.8 %	23.4 %	20.1 %	100.0 %		
कुल	आवृति	30	50	36	68	46	230		
	%	13.0 %	21.7 %	15.7 %	29.6 %	20.0 %	100.0 %		

तालिका 4 में $x^2 = 7.946$, पियर्सन का मान 0.159 है,जो 0.05 के विश्वास स्तर के मान से ज्यादा है। जो दर्शाता है कि जेंडर व मोबाइल फोन के नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नही है। मोबाइल फोन ग्रामीण पुरुषों और महिलाओं दोनों के मनोविज्ञान पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। अतः शोध की परिकल्पना संख्या–2 अस्वीकृत होती है। पंजाब एवं हरियाणा के चयनित गांव के 50 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण लोग स्वीकार करते हैं कि मोबाइल फोन ने उनके मनोविज्ञान को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। वे मोबाइल फोन पर किसी मैसेज या कॉल का जवाब ना दे सकने पर उदास व चिंतित हो जाते हैं। इसलिए लोग काम के दौरान, रात को नींद के बीच में और सुबह उठते ही अपना मोबाइल फोन चेक करते हैं। गांव में लोग मोबाइल फोन के बिना अकेलापन व असहाय भी महसूस करते हैं। क्योंकि लोगों को मोबाइल फोन की लत लग गई है। मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग से दिमाग में अनचाहे विचार आते हैं। जो नकारात्मकता को बढ़ाते हैं। वे जिस प्रकार का कंटेंट मोबाइल फोन पर देखते है वहीं पूरा दिन दिमाग में चलता रहता है। बाद में स्थाई तौर पर उसे ग्रहण कर लेते है। लगभग 50 प्रतिशत ग्रामीणों को मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग से चिंता, तनाव व अवसाद का सामना करना पड़ रहा हैं। ग्रामीण लोगों के व्यवहार में मोबाइल फोन के कारण चिड़चिड़ापन आ गया है। मोबाइल फोन का उपयोग एकाग्रता के लिए विध्वंसक है। ग्रामीण स्वीकार करते हैं कि मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग से उनकी यादाशत कमजोर हुई है। अधिकांश ग्रामीण लोग नोमोफोबिया(मोबाइल फोन के खोने का डर), टेक्सटाफ्रीनिया(संदेश आने का भ्रम) और फैंटम वाइब्रेशन सिंड्रोम(मोबाइल फोन के कम्पन का भ्रम) मनोवैज्ञानिक बीमारियों से ग्रसित हैं। ग्रामीण लोग चिंता को दूर करने के लिए मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। सर्वेक्षण में शामिल आधे से अधिक लोगों को मोबाइल फोन के कारण अनिंद्रा की समस्या का सामना करना पड़ा है। देर रात तक मोबाइल फोन के उपयोग के कारण नींद आने में बाधा उत्पन्न होती है। मोबाइल फोन लोगों के व्यवहार को चिड़चिड़ा बना रहा है(अहिल्या तिवारी,2014)। पंजाब एवं हरियाणा के ग्रामीण परिवारों में भी यह समस्या बढ़ रही है। पढ़ाई के बीच मे मोबाइल फोन का उपयोग पढ़ाई में बाधा उत्पन्न करता है(ई. बुन. ली,2015)। ग्रामीण परिवार भी मोबाइल फोन को एकाग्रता के लिए विध्वंसक मानते हैं। मोबाइल फोन के कम्पन का भ्रम रहता है(अशोक नाथ व अन्य,2015)।लोगों को मोबाइल फोन के रिंग बजने जैसी आवाज सुनाई देती है जिसे रिंगएक्जाइटी नामक बीमारी के नाम से जाना जाता है यह बीमारी धीरे-धीरे लोगों में पाई जाने लगी है व मोबाइल फोन से लोगों को स्मृति संबंधी समस्या आ रही है(अहिल्या तिवारी,2014)।प्रस्तुत अध्ययन से प्रमाणित होता है कि मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग के कारण पंजाब एवं हरियाणा के ग्रामीण परिवारों में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नकारात्मक समयस्याएं पैदा हो रही हैं।

6.0 निष्कर्ष :

ग्रामीण परिवारों में मोबाइल फोन की अप्रोच सिर्फ शेयरिंग व केयररिंग की नहीं है। ग्रामीण परिवार मोबाइल फोन से केवल संचार व संवाद ही नही करते बल्कि संचार के अलावा भी बहुत सारे रोजमर्रा के कार्यों के लिए लोग अब मोबाइल फोन का प्रयोग कर रहे हैं। कोरोना महामारी के दौर में मोबाइल फोन लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभरा है। पूर्णबंदी के समय में मोबाइल सूचना एवं संचार के साथ साथ व्यापार, शिक्षा एवं दैनिक जरूरतों को पूरा करने का माध्यम भी बना है। शहरों की तरह ग्रामीण परिवारों में मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण डिजिटल डिवाइड खत्म हुआ है और लोगों को वैश्विक नागरिक बनाने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मोबाइल फोन पारिवारिक संचार की गुणवत्ता को

बढ़ाते हुए लोगों को जोड़ने वाले उपकरण के रुप में साबित हो रहा है। दैनिक जीवन के बहुत सारे काम लोग मोबाइल फोन से आसानी से कर लेते हैं इसलिए उपभोक्ता इसे आनंददायी एवं रिश्तों में गर्माहट भरने वाले उपकरण के रूप में भी देखते हैं। गांव में एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो मोबाइल फोन को एक नकारात्मक पारिवारिक उपकरण के रुप में भी देख रहे हैं। उनको लगता है कि मोबाइल के कारण परिवार के लोग एक दूसरे को अधिक समय नहीं दे पा रहे हैं, परिवार के गुणवत्तापूर्ण समय को मोबाइल निगल रहा है। परिवार के लोग भी फेस टू फेस की बजाए स्क्रीन के माध्यम से अधिक बातचीत कर रहे हैं। पारिवारिक संबंधो में नकारात्मकता, गलतफहमी एवं झगड़ों का एक बड़ा कारण मोबाइल बन रहा है। मोबाइल के कारण ग्रामीण समाज में झूठ बोलने की प्रवृति बढ़ी है। हैलो से मोबाइल फोन पर बातचीत की शुरुआत होने की बजाय तुम कहां हो से होने लगी है। गांव में एक दूसरे के घर आना-जाना कम हुआ है। शहर की तरह गांव का जीवन भी आभासी हो रहा है। जिसके कारण लोगों के लिए यह आनंद के साथ-साथ एक बड़ी सामाजिक समस्या भी बन रहा है। ग्रामीण परिवार में मोबाइल फोन वरदान और अभिशाप दोनों साबित हो रहा है।

संयुक्त और एकल दोनों ही परिवारों के पुरुषों और महिलाओं पर मोबाइल फोन ने अपना समान प्रभाव डाला है। कुछ लोग मानते हैं कि मोबाइल फोन के होने से वे पहले से अधिक सुरक्षित व सशक्त महसूस करते हैं। हमेशा अपने घर व घर वालों से जुड़ा महसूस करते हैं। कुछ लोग इसे कॅरियर व अपने काम के लिए भी उपयोगी माध्यम मानते हैं। उनकी यह धारणा है कि मोबाइल ने उन्हें मनोवैज्ञानिक रुप से मजबूत बनाता है। अध्ययन में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की भी है जो कहते हैं कि मोबाइल फोन ने उन्हें असहाय व अकेला बना दिया है। वे इसे तनाव, चिंता व अवसाद का कारण मानते हैं। मोबाइल फोन ने व्यवहार के स्तर पर उन्हें गुस्सैल, चिड़चिड़ा, उदास व अवसादी व्यक्ति बना दिया है। गांव के लोगों की अब मोबाइल से यादाश्त कमजोर हो रही है और नींद न आना, घबराहट, मोबाइल फोन खोने का डर जैसी कईं मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा हो रही हैं।

7.0 संदर्भ

i. www.trai.gov.in.2023
ii. Jeffery,R.,Doron,A. (2013).Cell phone nation.Hachette india.Gurgaon
iii. [kkaMsdj] ofurk d- ¼2017½. Hkkjrh; ehfM;k O;olk;- lst izdk'ku] 4laLdj.k] ubZ fnYyh
iv. The New Indian Express(2023, January 21).Number of smartphones doubled in rural india from pre- covid era: AEAR report 2022.
v. Mundial, F. E. (2021). *Global gender gap report*. World economic forum.
vi. Media Regulator Ofcom Report. (2022). A decade of digital dependency.https://www.ofcom.org.uk/about-ofcom/latest/features-and-news/decade-of-digital-dependency.
vii. https://www.statista.com/statistics/748053/worldwide-top-countries-smartphone-users/
viii. Kumar, A., Tewari, A., Shroff, G., Chittamuru, D., Kam, M., & Canny, J. (2010, April). An exploratory study of unsupervised mobile learning in rural India. In *Proceedings of the SIGCHI Conference on Human Factors in Computing Systems* (pp. 743-752).
ix. Mehta, B. S. (2016). Impact of mobile phone on livelihood of rural people. *Journal of Rural Development*, *35*(3), 483-505.
x. Ling, R., & Yttri, B. (2005). Control, emancipation and status: The mobile telephone in the teen's parental and peer group control relationships [Electronic Version] . Retrieved April 18, 2020.
xi. frokjh] v-¼2014½-lekt ij eksckby Qksu dk izHkko-iafM+r jfo'kadj "kqDy fo'ofo|ky;-
xii. Sharma, S. (2009, September). Rural India Calling. In *USID Foundation, 3rd India International HCI Conference, Bangalore, India* (pp. 18-20).
xiii. Fox, K. (2001). Evolution, alienation and gossip: The role of mobile telecommunications in the 21st century. *Social Issue Research Center*.
xiv. Singh, S. (2001). Gender and the use of the Internet at home. *New Media & Society*, *3*(4), 395-415.
xv. Taywade, A., & Khubalkar, R. (2019). Gender differences in smartphone usage patterns of adolescents. *The International Journal of Indian Psychology*, *7*(4), 516-523.
xvi. Dogar, M. N., Arif, M., Kashif, S., & Khalid, R. (2022). Improving Quality of Social Life: A phenomenological Study of Mobile Phones as Leisure Partners. *Indian Journal of Economics and Business*, *21* (2).
xvii. Tenhunen, S. (2018). *A village goes mobile: Telephony, mediation, and social change in rural India*. Oxford University Press.
xviii. Kushlev, K., & Dunn, E. W. (2019). Smartphones distract parents from cultivating feelings of connection when spending time with their children. *Journal of Social and Personal Relationships*, *36* (6), 1619-1639.
xix. JhokLro] e-] dqekj] jkds'k fr- ¼2019½-orZeku lekt ij eksckby Qksu dk izHkko- *International Journal og*

reviews and research in social sciences,7(2),537-543.

xx. Shoukat, S. (2019).Cell phone addiction and psychological and physiological health in adolescents. *EXCLI journal*, *18*, 47.

xxi. Kildare, C. A., & Middlemiss, W. (2017). Impact of parents mobile device use on parent-child interaction: A literature review. *Computers in Human Behavior*, *75*, 579-593

xxii. Mcgrath,S. (2012). The Impact of new media technologies on social interaction in the household.

xxiii. Kennedy-Eden, H. (2014). Do smart phones bring us closer? A family life and family vacation perspective.

xxiv. www.censusof india.com 2011

xxv. Radesky, J. S., Kistin, C., Eisenberg, S., Gross, J., Block, G., Zuckerman, B., & Silverstein, M. (2016). Parent perspectives on their mobile technology use: The excitement and exhaustion of parenting while connected. *Journal of Developmental & Behavioral Pediatrics*, *37* (9), 694-701.

xxvi. Groarke, H. (2014). The impact of smartphones on social behaviour and relationships.

xxvii. Rotondi, V., Stanca, L., & Tomasuolo, M. (2017).Connecting alone: Smartphone use, quality of social interactions and well-being. *Journal of Economic Psychology*, *63*, 17-26.

xxviii. Sophie,H.&Christina,A. (2018).On the role of smartphones for family relationships.https://www.academia.edu/37743790/On_the_Role_of_Smartphones_for_Family_Relationships.

xxix. Sbarra, D. A., Briskin, J. L., & Slatcher, R. B. (2019). Smartphones and close relationships: The case for an evolutionary mismatch. *Perspectives on Psychological Science*, *14* (4), 596-618.

xxx. Radesky, J., & Moreno, M. A. (2018).How to consider screen time limits… for parents. *JAMA pediatrics*, *172* (10), 996-996.

xxxi. Lee, E. B. (2015). Too much information: Heavy smartphone and Facebook utilization by African American young adults. *Journal of Black Studies*, *46* (1), 44-61.

xxxii. Nath, A., & Mukherjee, S. (2015). Impact of Mobile Phone/Smartphone: A pilot study on positive and negative effects. *International Journal of Advance Research in Computer Science and Management STUDIES*, *3* (5), 294-302.